



पत्र-पुष्प



निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र (15-07-15)

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति लाडले, एकान्तवासी बन एकाग्रता की शक्ति द्वारा एकरस स्थिति का अनुभव कर सिद्धि स्वरूप बनने वाली निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें, ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार – अभी तो चारों ओर योग तपस्या की भट्टियों में सभी मन-बुद्धि की एकाग्रता का बहुत अच्छा अनुभव कर रहे हैं। एकाग्रता के आधार पर स्व-स्वरूप और बाप का स्वरूप स्पष्ट अनुभव होता है और हर संकल्प, बोल वा कर्म की सिद्धि प्राप्त होने लगती है। तो बोलो, सभी ऐसी एकाग्रता का अभ्यास करते रहते हो ना! समय प्रमाण अब इसी अभ्यास की बहुत-बहुत आवश्यकता है। साथ-साथ यह जुलाई मास तो हमारी मीठी दीदी का यादगार मास है, जैसे दीदी सदा एकव्रता होकर रही, दिल में सदा एक बाबा दूसरा न कोई। एक बल एक भरोसे के आधार से, एकनामी, एकानामी और एकाग्रता का अवतार बनकर रही, जिन्होंने मीठी दीदी-दादी की पालना ली है, वे तो अनुभवी हैं ही। दीदी सच्ची गोपिका थी, दीदी का बाबा से अति प्यार था जो बाबा कहते बाबा के प्यार में लवलीन हो जाती, साथ-साथ दीदी का पढ़ाई पर पूरा ध्यान था। सदा हाथ में डायरी पेन लेकर क्लास में जाना, रैग्युलर और पंचुअल रहना दीदी ने सिखाया। दीदी के साथ मीठी दादी का भी वन्डरफुल पार्ट रहा, दोनों ने सभी के दिलों पर अपनी बहुत अच्छी यादगार डाली है। अगस्त मास फिर मीठी दादी का मास है, दादी का सदा सेवा से प्यार रहा। हमेशा सभी में बहुत अच्छा उमंग भरती रही। विश्व का कोई भी कोना, एक छोटा गांव भी ईश्वरीय सन्देश से वंचित न रहे, दादी सदा हर एक को अपना तन-मन-धन सफल करने की प्रेरणा देती रही। ऐसे हमारे सभी पूर्वजों का चेहरा देखो, हर एक के रग-रग में मीठा बाबा और बाबा की सेवा समाई हुई है।

अभी तो भाई बहिन के सच्चे प्यार का यादगार पावन पर्व रक्षाबंधन भी समीप आ रहा है फिर जन्माष्टमी भविष्य सतयुगी दुनिया की याद दिलाता है। इन यादगार त्योहारों पर भी सब जगह बहुत अच्छी सेवायें होती हैं। साथ-साथ यह त्योहार सम्पूर्ण पावन, सतोप्रधान बनने की प्रतिज्ञा भी याद दिलाते हैं। अब समय प्रमाण हर एक सिर्फ यही ध्यान रखे कि मेरे से कोई ऐसी भूल न हो जो उसका पश्चाताप करना पड़े, इसके लिए अपने को आपेही सावधान करना है। अब समय एक दो के आगे सावधान रह करके उन्नति को पाने का है, सावधान करने का नहीं। अगर हम सावधान रहेंगे तो बाबा भी खुश, परिवार भी खुश, दादियां भी खुश, जो भी मिलेंगे जहाँ भी रहेंगे वो सब खुश। यही है सच्ची सावधानी। तो अब संगम की इन अन्तिम घड़ियों में अपनी ऐसी स्थिति बनानी है जो रॉयल्टी से बाबा के साथ वापस जा सकें, इसके लिए सेकेण्ड में लाइट स्वरूप में स्थित हो साइलेन्स में जाने का अभ्यास करते रहना है।

बाकी मधुवन की योग भट्टियों के समाचार तो आपको मिलते रहते होंगे। सभी खूब रिफ्रेश हो स्वयं में शक्ति भर रहे हैं। अच्छा - सबको बहुत-बहुत याद....

ईश्वरीय सेवा में,
बी.के. जानकी



ये अव्यक्त इशारे



तपस्या वर्ष (अगस्त 2015) के लिए विशेष होम वर्क

A) अब लगन की अग्नि को ज्वाला रूप बनाओ

1) बापदादा बच्चों को विशेष ईशारा दे रहे हैं - बच्चे अब तीव्र पुरुषार्थ की लगन को अग्नि रूप में लाओ, ज्वालामुखी बनो। जो भी मन के, सम्बन्ध-सम्पर्क के हिसाब-किताब रहे हुए हैं - उन्हें ज्वाला स्वरूप की याद से भस्म करो।

2) पावरफुल योग अर्थात् लगन की अग्नि, ज्वाला रूप की याद ही भ्रष्टाचार, अत्याचार की अग्नि को समाप्त करेगी और सर्व आत्माओं को सहयोग देगी। इससे ही बेहद की वैराग्य वृत्ति प्रज्वलित होगी। याद की अग्नि एक तरफ उस अग्नि को समाप्त करेगी दूसरी तरफ आत्माओं को परमात्म सन्देश की, शीतल स्वरूप की अनुभूति करोगी। इससे ही आत्मायें पापों की आग से मुक्त हो सकेंगी।

3) समय प्रमाण अब सर्व ब्राह्मण आत्माओं को समीप लाते हुए ज्वाला स्वरूप का वायुमण्डल बनाने की सेवा करो, उसके लिए चाहे भट्टियां करो या आपस में संगठित होकर रूहरिहान करो लेकिन ज्वाला स्वरूप का अनुभव करो और कराओ, इस सेवा में लग जाओ तो छोटी-छोटी बातें सहज परिवर्तन हो जायेंगी।

4) योग को ज्वाला रूप बनाने के लिए सेकण्ड में बिन्दी स्वरूप बन मन-बुद्धि को एकाग्र करने का अभ्यास बार-बार करो। स्टॉप कहा और सेकण्ड में व्यर्थ देह-भान से मन-बुद्धि एकाग्र हो जाए। ऐसी कन्ट्रोलिंग पावर सारे दिन में यूज करो। पावरफुल ब्रेक द्वारा मन-बुद्धि को कन्ट्रोल करो, जहाँ मन-बुद्धि को लगाना चाहो वहाँ सेकण्ड में लग जाए।

5) योग माना शान्ति की शक्ति। यह शान्ति की शक्ति बहुत सहज स्व को और दूसरों को परिवर्तन करती है, इससे व्यक्ति भी बदल जायेंगे तो प्रकृति भी बदल जायेगी। व्यक्तियों को तो मुख का कोर्स करा लेते हो लेकिन प्रकृति को बदलने के लिए शान्ति की शक्ति अर्थात् योगबल ही चाहिए।

6) योग में जब और सब संकल्प शान्त हो जाते हैं, एक ही संकल्प रहता “बाप और मैं” इसी को ही पावरफुल योग कहते हैं। बाप के मिलन की अनुभूति के सिवाए और सब संकल्प समा जायें तब कहेंगे ज्वाला रूप की याद, जिससे परिवर्तन होता है।

7) जब योग में बैठते हो तो समाने की शक्ति सेकण्ड में यूज करो। सेवा के संकल्प भी समा जाएं इतनी शक्ति हो जो स्टॉप कहा और स्टॉप हो जाए। फुल ब्रेक लगे, ढीली ब्रेक नहीं।

अगर एक सेकण्ड के बजाए ज्यादा समय लग जाता है तो समाने की शक्ति कमजोर कहेंगे।

8) शक्तिशाली ज्वाला स्वरूप की याद तब रहेगी जब याद का लिंक सदा जुटा रहेगा। अगर बार-बार लिंक टूटता है, तो उसे जोड़ने में समय भी लगता, मेहनत भी लगती और शक्तिशाली के बजाए कमजोर हो जाते हो।

9) पावरफुल मन की निशानी है—सेकण्ड में जहाँ चाहे वहाँ पहुंच जाए। मन को जब उड़ना आ गया, प्रैक्टिस हो गई तो सेकण्ड में जहाँ चाहे वहाँ पहुंच सकता है। अभी-अभी साकार वतन में, अभी-अभी परमधाम में, सेकण्ड की रफ्तार है - अब इसी अभ्यास को बढ़ाओ।

10) पावरफुल याद के लिए सच्चे दिल का प्यार चाहिए। सच्ची दिल वाले सेकण्ड में बिन्दु बन बिन्दु स्वरूप बाप को याद कर सकते हैं। सच्ची दिल वाले सच्चे साहेब को राज़ी करने के कारण, बाप की विशेष दुआयें प्राप्त करते हैं, जिससे सहज ही एक संकल्प में स्थित हो ज्वाला रूप की याद का अनुभव कर सकते हो, पावरफुल वायब्रेशन फैला सकते हो।

11) योग में सदा लाइट हाउस और माइट हाउस की स्थिति का अनुभव करो। ज्ञान है लाइट और योग है माइट। ज्ञान और योग - दोनों शक्तियां लाइट और माइट सम्पन्न हो इसको कहते हैं मास्टर सर्वशक्तिमान। ऐसी शक्तिशाली आत्मायें किसी भी परिस्थिति को सेकण्ड में पार कर लेती हैं।

12) ज्वाला स्वरूप की स्थिति का अनुभव करने के लिए निरन्तर याद की ज्वाला प्रज्वलित रहे। इसकी सहज विधि है सदा अपने को “सारथी” और “साक्षा” समझकर चलो। आत्मा इस रथ की सारथी है - यह स्मृति स्वतः ही इस रथ (देह) से वा किसी भी प्रकार के देहभान से न्यारा बना देती है। स्वयं को सारथी समझने से सर्व कर्मेन्द्रियाँ अपने कन्ट्रोल में रहती हैं। सूक्ष्म शक्तियां मन-बुद्धि-संस्कार भी ऑर्डर प्रमाण रहते हैं।

13) सारथी अर्थात् आत्म-अभिमानी क्योंकि आत्मा ही सारथी है। ब्रह्मा बाप ने इस विधि से नम्बरवन की सिद्धि प्राप्त की, तो फॉलो फॉदर करो। जैसे बाप देह को अधीन कर प्रवेश होते अर्थात् सारथी बनते हैं देह के अधीन नहीं होते, इसलिए न्यारे और प्यारे हैं। ऐसे ही आप सभी ब्राह्मण आत्माएं भी बाप समान सारथी की स्थिति में रहो। सारथी स्वतः ही साक्षी हो कुछ भी करेंगे, देखेंगे, सुनेंगे और सबकुछ करते भी माया की

लेप-छेप से निर्लेप रहेंगे।

14) कई बच्चे कहते हैं कि जब योग में बैठते हैं तो आत्म-अभिमानि होने के बदले सेवा याद आती है। लेकिन ऐसा नहीं होना चाहिए क्योंकि लास्ट समय अगर अशरीरी बनने की बजाए सेवा का भी संकल्प चला तो सेकण्ड के पेपर में फेल हो जायेंगे। उस समय सिवाय बाप के, निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी - और कुछ याद नहीं। सेवा में फिर भी साकार में आ जायेंगे इसलिए जिस समय जो चाहे वह स्थिति हो, नहीं तो धोखा मिल जायेगा।

15) आप बच्चों के पास पवित्रता की जो महान शक्ति है, यह श्रेष्ठ शक्ति ही अग्नि का काम करती है जो सेकण्ड में विश्व के किचड़े को भस्म कर सकती है। जब आत्मा पवित्रता की सम्पूर्ण स्थिति में स्थित होती है तो उस स्थिति के श्रेष्ठ संकल्प से लगन की अग्नि प्रज्ज्वलित होती है और किचड़ा भस्म हो जाता है, वास्तव में यही योग ज्वाला है। अभी आप बच्चे अपनी इस श्रेष्ठ शक्ति को कार्य में लगाओ।

B) ज्वालास्वरूप स्थिति में रह शक्तिशाली याद का अनुभव करो

1) तपस्वी मूर्त का अर्थ है - तपस्या द्वारा शान्ति के शक्ति की किरणों चारों ओर फैलती हुई अनुभव में आयें। यह तपस्वी स्वरूप औरों को देने का स्वरूप है। जैसे सूर्य विश्व को रोशनी की और अनेक विनाशी प्राप्तियों की अनुभूति कराता है। ऐसे महान तपस्वी आत्मायें ज्वाला रूप शक्तिशाली याद द्वारा प्राप्ति के किरणों की अनुभूति कराती हैं।

2) अभी ज्वालामुखी बन आसुरी संस्कार, आसुरी स्वभाव सबकुछ भस्म करो। जैसे देवियों के यादगार में दिखाते हैं कि ज्वाला से असुरों का संघार किया। असुर कोई व्यक्ति नहीं लेकिन आसुरी शक्तियों को खत्म किया। यह अभी आपकी ज्वाला-स्वरूप स्थिति का यादगार है। अब ऐसी योग की ज्वाला प्रज्ज्वलित करो जिसमें यह कलियुगी संसार जलकर भस्म हो जाये।

3) जैसे दुःखी आत्माओं के मन में यह आवाज शुरू हुआ है कि अब विनाश हो, वैसे ही आप विश्व-कल्याणकारी आत्माओं के मन में यह संकल्प उत्पन्न हो कि अब जल्दी ही सर्व का कल्याण हो तब ही समाप्ति होगी। विनाशकारियों को कल्याणकारी आत्माओं के संकल्प का इशारा चाहिये इसलिए अपने एवररेडी बनने के पॉवरफुल संकल्प से ज्वाला रूप योग द्वारा विनाश ज्वाला को तेज करो।

4) जैसे सूर्य की किरणें फैलती हैं, वैसे ही मास्टर सर्वशक्तिवान् की स्टेज पर शक्तियों व विशेषताओं रुपी किरणें चारों ओर

फैलती अनुभव करें, इसके लिए "मैं मास्टर सर्वशक्तिवान्, विघ्न-विनाशक आत्मा हूँ" इस स्वमान के स्मृति की सीट पर स्थित होकर कार्य करो तो विघ्न सामने तक भी नहीं आयेंगे।

5) जब तक आपकी याद ज्वाला रूप नहीं बनी है तब तक यह विनाश की ज्वाला भी सम्पूर्ण ज्वाला रूप नहीं लेती है। यह भड़कती है, फिर शीतल हो जाती है क्योंकि ज्वाला मूर्त और प्रेरक आधार-मूर्त आत्मायें अभी स्वयं ही सदा ज्वाला रूप नहीं बनी हैं। अब ज्वाला-रूप बनने का दृढ़ संकल्प लो और संगठित रूप में मन-बुद्धि की एकाग्रता द्वारा पावरफुल योग के वायब्रेशन चारों ओर फैलाओ।

6) ज्वाला-रूप बनने के लिए यही धुन सदा रहे कि अब वापिस घर जाना है। जाना है अर्थात् उपराम। जब अपने निराकारी घर जाना है तो वैसे अपना वेष बनाना है। तो जाना है और सबको वापस ले जाना है - इस स्मृति से स्वतः ही सर्व-सम्बन्ध, सर्व प्रकृति के आकर्षण से उपराम अर्थात् साक्षी बन जायेंगे। साक्षी बनने से सहज ही बाप के साथी व बाप-समान बन जायेंगे।

7) जितना स्थापना के निमित्त बने हुए ज्वाला-रूप होंगे उतना ही विनाश-ज्वाला प्रत्यक्ष होगी। संगठन रूप में ज्वाला-रूप की याद विश्व के विनाश का कार्य सम्पन्न करेगी। इसके लिए हर सेवाकेन्द्र पर विशेष योग के प्रोग्राम चलते रहें तो विनाश ज्वाला को पंखा लगेगा। योग-अग्नि से विनाश की अग्नि जलेगी, ज्वाला से ज्वाला प्रज्ज्वलित होगी।

8) लास्ट सो फास्ट पुरुषार्थ ज्वाला-रूप का ही रहा हुआ है। पाण्डवों के कारण यादव रुके हुए हैं। पाण्डवों की श्रेष्ठ शान, रुहानी शान की स्थिति यादवों के परेशानी वाली परिस्थिति को समाप्त करेगी। तो अपनी शान से परेशान आत्माओं को शान्ति और चैन का वरदान दो। ज्वाला स्वरूप अर्थात् लाइट हाउस और माइट हाउस स्थिति को समझते हुए इसी पुरुषार्थ में रहो।

9) विशेष याद की यात्रा को पॉवरफुल बनाओ, ज्ञान-स्वरूप के अनुभवी बनो। आप श्रेष्ठ आत्माओं की शुभ वृत्ति व कल्याण की वृत्ति और शक्तिशाली वातावरण अनेक तड़पती हुई, भटकती हुई, पुकार करने वाली आत्माओं को आनन्द, शान्ति और शक्ति की अनुभूति करायेगी।

10) जैसे अग्नि में कोई भी चीज़ डालो तो नाम, रूप, गुण सब बदल जाता है, ऐसे जब बाप के याद के लगन की अग्नि में पड़ते हो तो परिवर्तन हो जाते हो। मनुष्य से ब्राह्मण बन जाते, फिर ब्राह्मण से फरिश्ता सो देवता बन जाते। लगन की अग्नि से ऐसा परिवर्तन होता है जो अपनापन कुछ भी नहीं रहता, इसलिए याद को ही ज्वाला रूप कहा है।

11) अभी अच्छा-अच्छा कहते हैं, लेकिन अच्छा बनना है

यह प्रेरणा नहीं मिल रही है। उसका एक ही साधन है - संगठित रूप में ज्वाला स्वरूप बनो। एक एक चैतन्य लाइट हाउस बनो। सेवाधारी हो, स्नेही हो, एक बल एक भरोसे वाले हो, यह तो सब ठीक है, लेकिन मास्टर सर्वशक्तिवान की स्टेज, स्टेज पर आ जाए तो सब आपके आगे परवाने के समान चक्र लगाने लगेंगे।

12) जैसे किला बांधा जाता है, जिससे प्रजा किले के अन्दर सेफ रहे। एक राजा के लिए कोठरी नहीं बनाते, किला बनाते हैं। आप सभी भी स्वयं के लिए, साथियों के लिए, अन्य आत्माओं के लिए ज्वाला रूप याद का किला बांधो। याद के शक्ति की ज्वाला हो तो हर आत्मा सेफ्टी का अनुभव करेगी।

13) पाप कटेश्वर वा पाप हरनी तब बन सकते हो जब याद ज्वाला स्वरूप होगी। इसी याद द्वारा अनेक आत्माओं की निर्बलता दूर होगी। इसके लिए हर सेकण्ड, हर श्वास बाप और आप कम्बाइन्ड होकर रहो। कोई भी समय साधारण याद न हो। स्नेह और शक्ति दोनों रूप कम्बाइन्ड हो।

14) अभी निर्भय ज्वालामुखी बन प्रकृति और आत्माओं के अन्दर जो तमोगुण है उसे भस्म करो। तपस्या अर्थात् ज्वाला स्वरूप याद, इस याद द्वारा ही माया वा प्रकृति का विकराल रूप शीतल हो जायेगा। आपका तीसरा नेत्र, ज्वालामुखी नेत्र माया को शक्तिहीन कर देगा।

15) ज्वाला स्वरूप याद के लिए मन और बुद्धि दोनों को एक तो पावरफुल ब्रेक चाहिए और मोड़ने की भी शक्ति चाहिए। इससे बुद्धि की शक्ति वा कोई भी एनर्जी वेस्ट ना होकर जमा होती जायेगी। जितनी जमा होगी उतना ही परखने की, निर्णय करने की शक्ति बढ़ेगी। इसके लिए अब संकल्पों का बिस्तर बन्द करते चलो अर्थात् समेटने की शक्ति धारण करो।

16) इस कलियुगी तमोप्रधान जड़जड़ीभूत वृक्ष की दुर्दशा देखते हुए ब्रह्मा बाप को संकल्प आता है कि अभी-अभी बच्चों के तपस्वी रूप द्वारा, योग अग्नि द्वारा इस पुराने वृक्ष को भस्म कर दें, परन्तु इसके लिए संगठन रूप में फुलफोर्स से योग ज्वाला प्रज्ज्वलित चाहिए। तो ब्रह्मा बाप के इस संकल्प को अब साकार में लाओ।

शिवबाबा याद है ?

ओम् शान्ति

15-4-13

मधुबन

“दिलखुश मिठाई खाना माना मुख से ऐसी मीठी वाणी बोलना जिससे सबका दिल खुश हो जाए”

(दादी जानकी)

ओम् शान्ति। सखी रे पायो मैंने तीन रत्न। हम सब आपस में सखे सखियां, गोप गोपियां अनुभव की लेन देन करते हैं। बाबा, मुरली, मधुबन तीनों इकट्ठे हैं, यह भान आता है। अभी मधुबन में जो मुरली सुनते हैं वही बाहर भी सुनते हैं। यह साइंस ने बड़ा सुख दिया है। खुशी और आनंद में फर्क है! अतीन्द्रिय सुख है, सत्-चित्-आनंद स्वरूप बन रहे हैं। सच्चाई मन बुद्धि के द्वारा चित में चली गई है। स्मृति में और कुछ आता ही नहीं है।

बाबा ने कहा अचानक कुछ भी हो जाए एवररेडी रहना है। हमारी डा. अनिला बहन ने (रमेश भाई की बड़ी बहन ने कल अचानक (हार्टफेल से) शरीर छोड़ दिया। बाबा मम्मा हम सबकी बहुत सेवा की है। शांता माता ने बाँम्बे में पहले-पहले बाबा को बुलाया, रमेश भाई बाबा-मम्मा को बिठाके गाड़ी चलाया करता था। प्रवृत्ति सम्भालते सभी ने दिल से यज्ञ सेवा की है। अव्यक्त बाबा हमेशा कहता है दिल खोलकर देखो, दिल में कौन बैठा है! दिलवाला, दिल लेने वाला बाबा हमारे अन्दर बैठा है। हम बाबा के दिल में, बाबा हमारे दिल

में। बाबा दिलखुश मिठाई प्यार से खिलाता था। दिलखुश मिठाई खाना माना ऐसी मधुर वाणी हो जो सबकी दिल खुश हो जाए। जैसे मिठाई मुख में खाई जाती है, ऐसे वाणी मुख से बोलते हैं। हमारी अन्तर-मन की शान्ति है, मन शान्त है तो खुशी बहुत है। पहले कहते थे मन जीते जगतजीत, अभी पता चला है माया जीते जगतजीत। अभी सारे विश्व में रावणराज्य है। भारत में जहाँ लक्ष्मी नारायण का राज्य था वहाँ भी उसने राज्य करना शुरू कर दिया! अभी बाप रामराज्य की स्थापना कर रहा है। पवित्रता के योगबल से अभी हम बाबा के मददगार हैं। हम ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मण हैं, 100 परसेन्ट प्युरिटी ही हमारी रॉयल्टी है। जितनी पर्सनैलिटी में प्युरिटी है तो रीयल्टी की रॉयल्टी चलन चेहरे पर आती है। हमें चलन और चेहरे से सेवा करनी है। जो मंसा में है वह वाचा और कर्मणा में आता है। एक सेकण्ड सभी अपनी मंसा को देखो, मेरे मन में क्या है! मन में है एक बाबा दूसरा न कोई, फिर समय बड़ा बलवान है। संगम का समय है, जितनी तकदीर बनानी हो बना लो। समय हमको साथ दे रहा है। बाबा ने नॉलेज समय की दी है।

मैं कौन हूँ, मेरा कौन है, समय कौन सा है! यह भी समझ बाबा ने दी है। समय है सौभाग्यशाली से पदमापदम भाग्यशाली बनने का। कदम कदम में कमाई है इसलिए पदमापदम भाग्यशाली हैं। हम शिव शक्ति पाण्डव सेना हैं। साकार में बाबा ने हम बहनों को, कन्याओं माताओं को आगे रखा। अभी बहनों को आगे रखकर भाई सेवा में आगे हो गये हैं। डामा की हर सीन देख बाबा सदा हम बच्चों के सामने हाज़िर है। हम बच्चे बाबा के सामने हाज़िर हैं।

हम भक्ति में मानती थी जो करती हूँ वह भगवान देख रहा है। कर्म पर बड़ा ध्यान था। अभी के संस्कार सारा कल्प चलते हैं, भगवान मुझे देख रहा है। ऐसा कोई कर्म कर नहीं सकते हैं। इतना सावधान, खबरदार, होशियार रहना .. यह है महारथियों का काम। अभी जो महारथियों की सभा है, यह सारे साल में एक ही बार लगती है। बाबा ऐसी सभा को देखता है कितने शान्तप्रिय, सुख शान्ति में सम्पन्न है। सुख शान्ति की सम्पत्ति इतनी है जो मालामाल करती है। अप्राप्त नहीं कोई वस्तु ब्राह्मणों के खजाने में, कितना नशा चढ़ता है। मेरे को क्या चाहिए? “चाहिए” शब्द मुख पर आता ही नहीं है। कईयों की भाषा में चाहिए बहुत आता है, यह होना चाहिए, मेरे लिए यह होना चाहिए। सूक्ष्म आशा तृष्णा रही हुई है। कहते हैं

आप भये बुढ़ा तृष्णा भई जवान। सूक्ष्म माया तृष्णा आशा के रूप में जवान बना देती है। देह अभिमान का घेराव हो जाता है। तो देही-अभिमानि स्थिति में अन्दर गुप्त रहना, अतीन्द्रिय सुख में रहकर सुख शान्ति सम्पन्न बनना माना बाबा का नाम बाला करना। किसने ऐसा बनाया, अन्दर से क्या निकलेगा? मेरा बाबा। समय अनुसार हम त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी, तीनों लोकों के मालिक बन गये हैं। प्रैक्टिकल है ना। जैसे त्रिनेत्री बनने से सूक्ष्म लाइट आ गई, त्रिकालदर्शी बनने से माइट आ गई। फिर निमित्त मात्र यहाँ रहते, हैं वहाँ, स्थिति बनाते हैं अव्यक्त। स्थिति हमारी अव्यक्त, सम्पूर्ण रहे, हर श्वास, संकल्प में अटेन्शन हो। हमारी एम आबजेक्ट है लक्ष्मी-नारायण बनना। वह तो आटोमेटिक राजाई मिलेगी, परन्तु त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी, तीनों लोकों के मालिक अभी हम हैं। नॉलेज ने हमको इतनी पावर दी है। फिर माता पिता बंधु सखा, संबंध से, पढ़ाई से पावर दी है, पालना दी है। मैं साक्षी होकर देखती हूँ बाबा बच्चों को देख इतना खुश क्यों होता है? एक एक बाबा का बच्चा बाबा के सामने क्यों बैठा है। बनाने वाला वह है, हमको बनना है। जो बाबा की भावना है वह हमको पूरी करनी है। अच्छा। ओम् शान्ति।

दूसरा क्लास

“दुःख चिंता, भय से मुक्त सच्चाई प्रेम विश्वास से सम्पन्न जीवनमुक्त बनी”

(दादी जानकी)

ओम् शान्ति। बाबा ने इतना अच्छा सुनाया है जो अन्दर दिल, मन, चित में चला गया है। दिल खुश है, बाबा मिला है, समझ मिली है। आज के संसार में क्या लगा पड़ा है! बाबा कहते तुम्हें सब साक्षी होकर देखना है। पता है यह सब होने वाला है। कहीं फलड आया, तो कभी बॉम्ब फटा। हमने जो सुना है, देखा है, समझा है वही काम में आ रहा है। सेवा के जो प्लैन बनाये हैं, प्रैक्टिकल किया है, बाबा हमारे से खुश है।

हम पदमापदम भाग्यशाली हैं, जहाँ कदम वहाँ सेवा से पदमों की कमाई हुई है। भाग्यशाली हैं जो बाबा के बच्चे बन गये। सौभाग्यशाली हैं जो रोज पढ़ते हैं। सी फादर, फालो फादर करते हैं। मीठा बाबा जो सच्ची बात है वही सुनाता है। शरीर को कुछ होता है, यह कर्मभोग है, हिसाब-किताब है। उसका चिंतन नहीं, चिंता नहीं। कर्मभोग आया क्या करूं, पूछने की बात नहीं है, योगबल से काम लो। योगबल क्या है?

योग में चाहिए बुद्धि। मन शान्त, स्मृति शुद्ध, चित साफ, पुरानी कोई बात याद नहीं है। घर चलना है तो बैग बैगेज कोई पीठ पर रखकर नहीं चल सकते, पास्ट का खत्म करके जाना है। पास्ट को पास्ट करना, प्रेजन्ट में रहने की बाबा ने जैसे प्रेजेन्ट (गिफ्ट) दी है।

मैं तीन बार ओम् शान्ति बोलती हूँ। पहली ओम् शान्ति शान्ति देती है, दूसरी ओम् शान्ति शक्ति देती है, तीसरी ओम् शान्ति हर्षित बना देती है। शान्ति की शक्ति के बिगर कैसे हर्षित रहेंगे। हो नहीं सकता। बाबा ने ऐसा अमृत मंथन करके अमृत का कलष सिर पर रखा है। अमृत पिओ और पिलाओ। बाबा सतयुगी राज्य स्थापन कर रहा है, सतयुगी संस्कार बना रहा है। सतयुग में दुःख अशान्ति, लड़ाई झगड़ा नहीं होगा। अभी हमारे अन्दर वही संस्कार भर रहे हैं, न लड़ाई झगड़ा है, न तू मैं है, न तेरा मेरा है। बाबा से हमारा अच्छा कान्टेक्ट

हुआ है, मेरा सो तेरा है। इससे भविष्य हमारा अच्छा बना ही पड़ा है। सतयुग में आने वाली जो आत्मायें हैं वह बाबा को पहचान करके, मन कर्मेन्द्रियों को वश करके अतीन्द्रिय सुख में रहती हैं। हर एक दिल से पूछे मेरे दिल में क्या है! मुझे यह पक्का है, हमेशा कहती हूँ कि जहाँ बाप है वहाँ कोई बात नहीं, जहाँ बात है वहाँ बाप नहीं।

बाबा को जो सर्विस करानी है वह करायेगा। तन, मन, धन, संबंध सब सफल हुआ पड़ा है। निष्फल कुछ भी जाने वाला नहीं है, गैरन्टी है। बाबा ने विश्व के कोने-कोने से कैसे चुन लिया। जो और धर्मों में चले गये थे, उनको वापस बुला लिया। कमाल है बाबा की। बाबा कैसा है, क्या करता है, कैसे करता है! मुख्य बात है परमात्मा बाप को सब पुकारते हैं, उनको हमने देखा जाना, उनसे जो पाया है, वह हमारी जीवन यात्रा में सफल हो रहा है। दुःख, चिंता, भय से मुक्त हैं। सच्चाई, प्रेम, विश्वास से सम्पन्न हैं, जीवनमुक्त हैं। पहले सच्चाई फिर प्रेम से संबंध अच्छा हुआ है, फिर विश्वास बैठ गया है - कल्प पहले वाले हैं, बाबा हमारे सामने बैठा है, हम उसके सामने बैठे हैं। साकार भले अव्यक्त हुआ, किस पुरुषार्थ से अव्यक्त हुआ वह भी सिखलाया है।

आज की रचना बाबा की मुरलियों को सुनकर अनुभव

करती है, बाबा मेरा है। बाबा के अव्यक्त पालना की कमाल है, कोई यह नहीं कहता कि हमने साकार बाबा को नहीं देखा। ऐसी भासना देता है, जो यह डॉयमण्ड हॉल छोटा पड़ गया है। भावना है बाबा से मिलने जायेंगे। पहले भासना आई तब भावना बैठी है। सदा ही भावना अच्छी रखनी चाहिए। अपने लिए भी अच्छी औरों के लिए भी अच्छी, सबके लिए अच्छी। याद में बैठने का यह भी अच्छा तरीका है। बाबा को याद करते हैं, बाबा जैसे सारे विश्व को सकाश दे रहा है, कैसे दे रहा है, हमको फीलिंग आ रही है। वह सबको चला रही है। कहाँ रूकते नहीं, कोई रोकता नहीं। बाबा की सकाश चला रही है। सकाश उनको चला रही है जो श्रीमत पर चलते हैं इसलिए मैं अर्जी करती हूँ, प्लीज़ मनमत पर नहीं चलो। मन को मारो चमाट, चूं चूं न कर।

मेरे से कोई ने पूछा कि तुम किस पर प्रभावित हुई हो या तुम्हारे पर कोई प्रभावित हुआ है? हमारे पास न चमड़ी न दमड़ी, न रूप न रूपैया.. कौन प्रभावित होगा! न किसी से नफरत है, न किसी पर प्रभावित हूँ। इससे अपनी रक्षा करनी है तो सेफ रहो साफ रहो, न्यारे रहो। सफेद कपड़े की लाज़ रखो। अन्त मते में सफेद कपड़ा जेब खाली, हम सारे विश्व के मालिक हैं, कुछ नहीं चाहिए। खुशनसीब हैं। अच्छा

30-5-15

“सदा खुशी में रहना है तो और बातों में न जाकर एक बाबा की मुरली पर ही मनन-चिंतन करो”

(दादी गुल्जार जी -दिल्ली ओ.आर.सी)

हम सब तो आपस में एक दो को अच्छी तरह जानते हैं। बाबा के बच्चे अलग-अलग रहते भी ऐसे ही लगता है, जैसे सब एक साथ रहते हैं। हम सभी संगठन में सदा ही एक दो को दृष्टि देते, मिलते, रूहरूहान करते आगे बढ़ते हैं और बढ़ते रहेंगे। सब अच्छे हैं, सबको बहुत खुशी है। (दादी जी आपको देखकर सबको बहुत खुशी होती है) आप सबको देखकर हमें भी बहुत खुशी है। (दादी जी आप बहुत समय बाद आये) चाहे कितने ही समय के बाद आये परन्तु मन से तो मिलते ही रहते हैं। एक दो को मिलते हैं, रूहरिहान करते हैं, बाबा की बातें वर्णन करते हैं, हमारे लिए तो संसार ही यही है। सब देखो कितने खुशमिज़ाज हैं, सबकी खुशी चेहरे से दिखाई देती है। हम सब एक दो के पुराने साथी हैं, एक दो को देख कितनी खुशी होती है, ये मेरा भाई, ये मेरी बहन है। भल सेवा के लिए

अलग-अलग रहते हैं, परन्तु मन से तो मिलते ही रहते हैं। जब मेरा भाई, मेरी बहन कहते हैं तो मेरा बाबा याद आता है। भले हम मधुबन से आये, लेकिन आप भी तो कहीं न कहीं से आये, चाहे यहीं से आये। आप सबको मम्मा की तरफ से, मधुबन निवासियों की तरफ से, दिल्ली वालों की तरफ से बहुत-बहुत यादप्यार। जब कहीं से भी आते हैं तो सबके मुँह से निकलता है हमारी भी याद देना। (दादी जी आपको देखकर सबको शक्ति मिलती है) शक्तिशाली तो सब हैं ही, कभी शक्ति कम होती है क्या! जिस समय शक्ति कम होती है तो पुरुषार्थी हैं। (दादी जी आपमें ऐसा क्या है जो कहीं भी जाते हो तो बहार आ जाती है?) हमारे द्वारा सब बाबा को ही देख रहे हैं, हमें अकेले नहीं देखते हैं। बाबा हमारे साथ है। बाबा शब्द कहते हैं और बाबा में समा जाते हैं। ऐसा बाबा फिर कहाँ

मिलेगी।

(टीचर्स बहनों के साथ):- हमें अब ज्यादा विस्तार में नहीं जाना है, बाबा की याद में सार में रहना है। इतना तो ज्ञान है कि हम सब देवता बनने वाले हैं, अभी तक बना तो कोई भी नहीं है। कौन कहता है मैं बन गया? अभी सब पुरुषार्थी हैं। बाबा रोज़ मुरली में ध्यान खिचवाते हैं। यह नहीं सोचो मैं सब सुन चुकी, मैं बन चुकी, नहीं! बन रहे हैं। बाबा जब तक है, हमारा यह सुनना और सुनाना चलता ही रहेगा। जितना सुनें और धारणा करें उतना ही अच्छा है। आपस में रूहरिहान भले करो लेकिन जो धारणायुक्त है वही बोलो। वही अच्छा है। मूल बात है खुश रहो। छोटी-छोटी बातों में अपना मूड ऑफ नहीं करो, क्योंकि हमको बाबा के नज़दीक आना है। अभी भी नज़दीक रहते हैं, तो भविष्य में दूर थोड़ेही रहेंगे। तो नज़दीक आने के लिए जरूरी है जो बाबा कहते हैं वही बोलो। सबकुछ जानकर, स्पष्ट करके अपने को भी स्पष्ट करो। चालाकी नहीं होनी चाहिए। कई ऐसे होते हैं जो होता कुछ भी नहीं, लेकिन बात ऐसे करते हैं जो सुनने वाले समझते हैं कि नम्बरवन तो यही हैं, कई चालाकी के कारण करेंगे कुछ भी नहीं लेकिन बोलेंगे ऐसे जैसे नम्बरवन यही हैं। लेकिन हमें ऐसा नहीं बनना है, जहाँ सच्चाई है वहाँ सबकुछ है। जो भी है वह सच्चे दिल से अपने व दूसरे में धारणा देखें। तो कुछ भी हो, खुशी नहीं गंवाना। बस, बाबा और मैं, और बातों में नहीं जाओ। बाबा की मुरली ऐसी है जो हम उसको मनन करते-करते सारा दिन ही बिता दें, यह विशेषता चाहिए। और बातें न करके बाबा की मुरली के ऊपर ही मनन करो। बाबा की मुरली बहुत सहज है, इतना साल जो मुरली पढ़ी है तो अभी उसका अभ्यास करो, बस यह अटेन्शन रखो और बातों में न जाओ। चेक करो जो बाबा ने कहा वो हमने कहाँ तक किया, बस वो करना है, तो स्वतः ही यहाँ का वातावरण शक्तिशाली हो जायेगा। और

बातों में नहीं जाना है क्योंकि समय का कोई भरोसा नहीं, कभी भी कुछ भी हो सकता है, फिर सोचेंगे कि यह नहीं करते तो यह करते। उस समय टाइम ही ऐसा होगा, हाँ या ना का, इसलिए अपने को बचाते हुए वही करो जो बाबा कहते हैं। और कोई बात सोचने की वा बातों में जाने की जरूरत नहीं है, क्योंकि बाबा से बढ़कर तो कोई है नहीं। बाकी सबके गुण उठाओ। पुरुषार्थ में आगे जाने की जो प्वाइन्ट्स हैं वह अपने पास नोट करके देखो। मुरली जो है वह बाबा की है और कोई की नहीं। यह मुरली बहुत अच्छा सुनाती है, यह अच्छा बोलती है, यह भी दैहिक आकर्षण है, जो अब नहीं होनी चाहिए। मुरली बाबा की है, मुरली सुनकर एक बाबा ही याद आये। बाबा की मुरली में कुछ भी मिक्स नहीं करना चाहिए, बस बाबा और मैं। कई मुरली में कहानियां सुनाते हैं जिससे सुनने वाले को इन्ट्रेस्ट आये लेकिन उससे फायदा कुछ भी नहीं, बाबा के बजाए उसकी ही याद आयेगी जिसकी कहानी सुनाते हैं। और कोई बात सोचो नहीं, केवल बाबा का सुनो, सोचो और विचार सागर मंथन करो। जो भी कुछ लिखते व पढ़ते हो सब बाबा की मुरली से सम्बन्धित हो। भले कोई दूसरे क्लास कराते हैं लेकिन वह भी बाबा की मुरली का ही रिपीट करते हैं, तो वह भी कहो बाबा ने कहा। सीखा किससे? बाबा से। बाबा बोलता है तभी तो रिपीट करते हैं। बाबा बाबा कहते चलो तो बेड़ा पार हुआ पड़ा है, और कुछ मिक्स नहीं करना, केवल मेरा बाबा। कितना भी कोई अच्छा बोले लेकिन बाबा, बाबा है। बाबा के बजाए फलाने की मुरली सुनें, यह भी गलत है। सीखा किससे? होशियार बनी किससे? बाबा ने बनाया ना। कभी भी व्यर्थ नहीं सोचना क्योंकि उससे कोई फायदा नहीं। बाबा कहने से आवाज़ और चेहरा दोनों ही बदल जाते हैं। सदा बाबा की बातें सुन आगे बढ़ते रहो यही हमारी शुभ कामना है। ओमशान्ति।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

“खुद को सम्पूर्ण निर्विकारी बना लो तो निरहंकारी स्वतः बन जायेंगे” (रक्षाबंधन निमित्त)

आप सब कहाँ भी रहते मधुबन निवासी हो। जैसे लौकिक में कोई विदेश जाता तो उनको अपना परिवार याद आता, तो हमारा परिवार है मधुबन। सब आते जाते हो मधुबन। तन, मन, धन से सेवा करते हो मधुबन। तो यह मधुबन है आप सबका प्यारा घर इसलिए अगर कोई अच्छा कर्म भी करता तो

बाबा अथवा मधुबन का शान है। अगर कोई गलती करता तो मधुबन की बदनामी होती है इसलिए सदैव बुद्धि में रोज़ सुबह पक्का करो कि हमसे एक मात्र भी ऐसी कोई गलती न हो जो मैं बाबा की बदनामी कराने के निमित्त बनूँ। तो उसका पुरुषार्थ ही है कि खुद को सम्पूर्ण निर्विकारी बनाओ तब निरहंकारी

बनेंगे और सम्पूर्ण निर्विकारी का हर कर्म अकर्म होगा तब कर्मातीत बनेंगे। जब विकर्माजीत और कर्मातीत बनो तब बाबा के साथ घर चलेंगे। बाबा रोज़ समय की सूचना देता है इसलिए समय को देख खुद को एवररेडी बनाओ।

बाबा ने इतना सूक्ष्म में हम सबको सावधानी दी है जो कहाँ दृष्टि-वृत्ति भी अपवित्र नहीं हो। कोई भी शिकायत न आये। हर एक ब्राह्मण को इतनी सूक्ष्म-से-सूक्ष्म सावधानी रखनी चाहिए। लौकिक में तो चाहे दुनिया में क्या भी करें, कैसे भी चलें, कैसे भी रहें, कैसे भी घूमें, कैसे भी खायें, परन्तु हमारी मर्यादा में किसी को अंगुली टच करना भी नॉट एलाऊ है। बाकी तो क्या? हमारी मर्यादा में कोई भी एक दो को विकर्म करने की मदद नहीं करे, परन्तु विकर्मों से बचाने की मदद करे इसलिए एक एक ब्रह्माकुमार ब्रह्माकुमारी यह समझे, मेरी एक छोटी भूल हजारों को नोट हुई। जब कोई को कहो तेरी यह गलती है तो बुरा लगता है परन्तु यह नहीं सोचते कि मैंने कितना बुरा किया जो मेरे को हजारों ने देखा या सुना, इसलिए हमारी खुद के ऊपर सवेरे से रात तक हर कर्म में बहुत सावधानी चाहिए। तब बाबा कहते हैं कई सुस्त भी होते हैं, तो वह सुस्ती भी अनेकों को नोट होती है, उसको देखकर दूसरे भी सुस्त हो जाते हैं इसलिए अभी बाबा ने जो काम दिया है कि अपनी निराकारी और निर्विकारी स्थिति बनाओ तो हमारा यही पुरुषार्थ कर्मातीत बनने तक है। एक सेकण्ड में हम निकल जावें इस शरीर से और अशरीरी हो बैठें तब बिन्दु स्वरूप स्थिति बन सकती है। बिन्दु स्वरूप स्थिति बनाने का हमको सदा ध्यान रखना है। यह भी डेली का पुरुषार्थ है, अगर ऐसी निराकारी स्थिति बनती जाये तो यही हमारी सच्ची भट्टी है और यही हमारी स्वयं के साथ सर्व की सेवा है इसलिए भट्टी तो करते हो, परन्तु खुद को देखो ऐसी स्थिति बनी है?

दूसरा हमें एक बात बहुत ही पिंच होती - कोई आकर कहे कि क्या करूँ मेरा स्वभाव ऐसा है जो दूसरों को दुःख मिलता है। यह कोई जवाब है? मेरा स्वभाव ऐसा है जो दूसरों को दुःख मिलता है, यह कोई हम बाबा के योगी बच्चों का जवाब है? क्यों मिले दुःख? हमारे मन वचन कर्म से एक तो सबको शान्ति मिले, दूसरा पवित्रता की प्रेरणा मिले, तीसरा बाबा का हूँ, सब बाबा का बनें, ऐसी उनको प्रेरणा मिलें, चौथा, मेरे हर कार्य से प्रेरणा मिले कि मैं भी ऐसी पक्की ब्रह्माकुमारी, ब्रह्माकुमार बनूँ। ऐसे नहीं कहें कि अरे अभी तक कौन बने हैं? दूर रहना ही ठीक है। बाबा है बस, खत्म। अगर कोई मेरी चलन से, ऐसा कोई डिस्टर्ब होता तो उसका 100 गुणा दण्ड मुझे पड़ता है। एक आत्मा भी बाबा से दूर हो और दूर होने का कारण मैं

बनूँ, तो इस जैसा सूक्ष्म पाप और कोई दूसरा नहीं। यह पाप है इसलिए सदा यह ध्यान रखें - मुझे अपने मन्सा वाचा कर्मणा से दूसरों को प्रेरणा देनी है - बाबा के समीप आने की। उसकी माला बने। बाबा ने कहा है कि माला के दाने, दाने के समीप आयें, ऐसी माला बनाओ।

तो मेरा यही एक शुभ संकल्प है कि अभी राखी का त्योहार समीप आ रहा है। उसके पहले हर एक अपनी निराकारी और सम्पूर्ण निर्विकारी स्थिति बनाओ जिससे फरिश्ता स्थिति वा कर्मातीत स्थिति का अनुभव हो और हमारे कर्म अकर्म बनें। अब एक भी ऐसी गलती न हो जिस गलती का 100 गुणा दण्ड मिले क्योंकि ज्ञानी के ऊपर 100 गुणा दण्ड होता है इसलिए सदा अपने को ऊंचे-ते-ऊंची स्थिति पर देखो या अनुभव करो या मेहनत करो। तो साधन है निराकारी स्थिति। अब यह साधना करो। हमारी ऐसी सच्ची साधना सम्पन्न हो तब हम बाबा की पालना का रिटर्न दे सकेंगे। जो करेगा वो रिटर्न में बाबा की दुआओं का पात्र बनेगा। तो हमारे ऊपर बहुत बड़ी जवाबदारी है, हम बाबा के लाखों बच्चें हैं, ऐसे नहीं कि सिर्फ 2-4 की फैमिली है या सेन्टर हैं! नहीं। बाबा के लाखों बच्चे यहाँ से प्रेरणा लेकर जायें इसलिए स्वीट बाबा के स्वीट बच्चे अपनी स्वीट स्थिति बनाओ। वह स्वीट स्थिति है ही निराकारी, निर्विकारी, निरंहकारी अर्थात् फरिश्ता भव, कर्मातीत भव! अगर सब फरिश्ता हो जायें तो कितना अच्छा हो। तो इसके लिए इतना प्रिय बनो, इतना स्वीट बनो, इतना ही अपनी स्थिति सम्पन्न बनाओ। माया है - यह एक संकल्प में भी न आये, इतने विजयी बनो तब कहेंगे वाह बाबा वाह! वाह आपके बच्चे वाह! तो क्या सम्भव है? मायाजीत हो सकते हैं या नहीं! क्या कहेंगे? या उठने के बाद कहेंगे कि दादी तो कहती हैं परन्तु बड़ा मुश्किल है, ऐसे तो नहीं हो सकता है! या एक एक अन्दर से दृढ़ संकल्प करेंगे कि हम बाबा को मायाजीत बन करके सैम्पल बनके दिखायेंगे! इस रक्षाबंधन पर सभी ऐसा सम्पन्न बनने की राखी बंधवाओ। बोलो, ऐसी सम्पन्न स्थिति बन सकती है ना? पुरुषार्थ करो, मेहनत करो। दिल में पक्का संकल्प लो कि हमें मायाजीत, जगतजीत बनना ही है। अपनी दृष्टि वृत्ति को सम्पूर्ण पावन बनाना है। अब संकल्प और स्वप्न से भी अपवित्रता का नामनिशान समाप्त होना चाहिए, इसके लिए तपस्या करो। अपनी कर्मेन्द्रियों को ऐसा तपाओ जो कहा जाता योगी वह है जिसके अंग-अंग शीतल हों। योग तपस्या ही कर्मेन्द्रियों को शीतल बनायेगी। अब ऐसी रिजल्ट बाबा को मिलनी चाहिए। तो सभी ऐसे मायाजीत विजयी रत्न बनकर दिखायेंगे ना! अब ऐसी रूहरिहान करो, भट्टियों का पुरुषार्थ करो। ठीक है। अच्छा - ओम् शान्ति।